प्रातः क्लास पिता श्री ओमशान्ति 20-11-67

रिकार्डः- आज अंधेरे में हैं हम इन्सानः- ओमशान्ति। रूहानी बच्चों ने क्या सुनाऔर किसने पूछा? रूहानी बच्चों से सिर्फ रूहानी बाप ही प्रश्न पूछते हैं। क्योंकि बच्चों को पहले पहले ही समझाया जाता हैं आत्म अभिमानी हो बैठो। यह पहले नम्बर की उंच ते उंच सबजेक्ट। जो भी अच्छे पुरुषार्थी होंगे ब्राहमण कुल भुषण वह आत्माभिमानी हो बैठेंगे। तुम्हारा कुल भारत तो क्या सारे विश्व से न्यारा हैं। तुम हो सच्चे प्रजापिता ब्रहमा कु मुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राहमण कुल भुषण। क्योंकि तुम डैरेक्ट ईश्वर के सन्तान हो। यूं तो भाई2 तो सभी आत्माएं हैं, जिसको ब्रदर्स हुड कहा जाता हैं। सभी का बाप एक भगवान हैं। और उनको कहा जाता हैं उंच ते उंच भगवान। रचता, किसका? सारी रचना का। रचता और रचना के ज्ञान को कोई भी ऋषि मुनि आद नहीं जानते। वह भी नेती2 कहते गये। अर्थात हम रचता को नहीं जानते, गोया नास्तक हो गये। रचना को भी नहीं जानते तो नास्तक हुये। डबल नास्तक हो गये। बाप कहते हैं पहले अल्फ रचता को याद करो तो रचना के आद, मध्य अन्त का समाचार बाप आपे ही बताये देंगे। तुमको रचना की आद? मध्य अन्त का ज्ञान नहीं हैं। तो जरूर जानने वाला ही समझावेगा। तुमको पूछने की आवश्यकता नहीं रहती। तुम तो तुच्छ बुधि वा पत्थर बुधि थे। तब तो गीत में भी गाते हैं हे भगवान ज्ञान का दीपक आकर जलाओ। क्योंकि हम अंधेरे में हैं। द्वापर कलियुग को अंधेरी रात कहा जाता हैं। अंधेरी रात शुरु हो होती हैं कलयुग के अन्त में। घोर अंधियारा होता हैं तब पुकारते हैं, आकर हमारा ज्ञान दीपक जगाओ। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र दो। तो हम जाग जावें। सतयुग में तो ऐसे नहीं पुकारेंगे कि हमारा ज्ञान दीपक जगाओ। यह गीत भी इस समय निकलती हैं। सतयुग में न ऐसे गीत बनावेंगे न गावेंगे। वहां तो सब की ज्योत जग जाती हैं। तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र बाप आकर देते हैं। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप हैं। अनेक हो सके। वह एक ही सर्व का सदगति दाता हैं। वह समझते हैं हमारे में शास्त्रों का ज्ञान हैं। वह हैं भक्ति। सारा भारत तो क्या सारे विश्व में इस समय भक्ति का पहरा हैं। इनको भक्ति कल्ट कहा जाता हैं। तुम बच्चों को अब ज्ञान सूर्य-ज्ञान का तीसरा नेत्र दे रहे हैं। ज्ञान मिलता ही ब्राहमणों को। न देवताओं को न शुद्रों को यह ज्ञान हैं। वर्ण भी गाई जाती हैं। चित्रों में दिखाते हैं। सर्वोत्तम कुल हैं ही ब्राहमणों का। ब्राहमण चोटी हैं नम्। ब्राहमणों के लिए भी गया जाता हैं एक हैं प्रजापिता ब्रहमा के मुख वंशावली ब्राहमण। दूसरे हैं वह ब्राहमण। उनके लिए फिर ऐसे नहीं कहेंगे कि प्रजापिता ब्रहमा कें मुखवंशावली हैं। नहीं। वह हैं कुखवंशावली ब्राहमण। क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। तुम तो एडाप्टेड बच्चे हो। प्रजापिता ब्रहमा के ब्राहमण-ब्राहमणियां इतने ढेर कहां से आये। यह एडाप्शन होते हैं। क्रियटर पुरुष पहले पहले कन्या को एडाप्ट करते हैं। फिर उनको माता कहा जाता हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि पैदा किया। एडाप्ट करते हैं। तुम सब हो एडाप्टेड बच्चे। नहीं तो प्रजापिता ब्रहमा के इतने ढेर ब्रहमाकुमारियां कहां से आवे। कन्या को एडाप्ट करते हैं फिर उनको बच्चा पैदा होता हैं तो माता कहा जाता हैं। फिर मां बुढी होती हैं तो दादी कहा जाता। यहां दादी आद की बात नहीं। सब ब्रहमाकुमार कुमारियां भाई बहन हैं। हम भगवान के सन्तान हैं तो भाई-भाई होगये। फिर प्रजापिता ब्रहमा के एडाप्टेड बच्चे भाई बहन हो गये हुये। तुम्हारा सिर्फ यह एक ही सम्बन्ध हैं। बस। भाई-बहन हो गये तो कुदृष्टि वा क्रिमनल आईज़ना क्रिमनल एसाल्ट हो जाता हैं। हम भाईबहन हैं यह पक्का2 याद रहे इस में ही मेहनत है। इस क्रिमनल दृष्टि पर जो जीत पाते हैं वही स्कालरशिप पाते हैं। विजय माला के दाने बनते हैं। यह डीटी किंगडम स्थापन हो रही हैं। यह ल०ना० सतयुग के मालिक हैं ना। उन्हों ने यह पद कैसे प्राप्त किया? पुरुषोत्तम संगम युग पर। पद हमेशा पढाई से ही प्राप्त किया जाता हैं। यह हैं रूहानी पढाई। जो रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ पढाते हैं। अंग्रेज़ी में इसको स्प्रीच्युल नालेज भी कहा जाता हैं। स्प्रीच्युल नालेज सिवाये ब्राहमणों के और कोई पास होती नहीं। मनुष्यों को यह भी पता नहीं हैं कि भारत का प्राचीन स्प्रीच्युल रूहानी योग था। न कि जिसमानी। अभी तुमको पावन बनना है तोबुधि का योग